श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ अंतर्गत

समाधितंत्र अध्ययन वर्ष

सौजन्य : मातुश्री ललिताबेन व्रजलाल शाह परिवार, जलगांव

प्रश्नपत्र क्रमांक - ९ (कुल मार्कस–५०)

अभ्यासक्रम : **समाधितंत्र : गाथा ९६ से १०५**

परीक्षार्थीका नाम: ..... उम्र वर्ष : .....

मंडलका नाम : ..... गाँवका नाम : .....

फोन नंबर : ..... ता. २०-१-२०२३

सूचना : (१) प्रश्नोंके उत्तर समाधितंत्रके आधार पर देने होंगे।

प्रश्न–१ : कौंसमें दिये गये विकल्पमेंसे सही विकल्पसे रिक्तस्थानकी पूर्ति कीजिये। १०

(१) जैसे वांसका वृक्ष बांसके साथ धर्षणसे स्वयं अग्निरूप हो जाता है, वैसे आत्मा भी स्वयं चिदानंदमय चित्स्वरूपकी उपासना करके स्वयं ..... रूप हो जाता है। (अंतरात्मा, परमात्मा, बहिरात्मा)

(२) दिव्यध्वनि आदि निमित्त होने पर भी निरपेक्षरूपसे स्वयंके ..... से परमपदकी प्राप्ति होती है। (भवितव्य, भावना, पुरुषार्थ)

(३) साधकको निर्विकल्पदशामें स्वयंके आत्माका आश्रय और सविकल्पदशामें .....,,,,,.....की उपासना होती है। (अर्हंतादि, आत्मा, धर्म)

(४) संसार अवस्थामें शरीरके साथ आत्माका परस्पर ..... सम्बन्ध है। (संयोग, तादात्म्य, नित्य तादात्म्य)

(५) साधकको स्वयंके आत्माकी उपासना पूर्ण होते भगवानकी उपासनारूप ..... का अभाव होता है।(संकल्प, ईच्छा, विकल्प)

प्रश्न–२ : नीचे दिये गये प्रश्नके उत्तर "हा" अथवा "ना"में दिजीये। १०

(१) जीवकी इच्छा और शरीरकी क्रियाका सीधा निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध है। .....

(२) जैसे झोंपडी जल जाने पर उसमें रहा आकाश जलता नहीं है वैसे शरीरका नाश होने पर आत्माका नाश होता नहीं है।...

(३) साधकको निर्विकल्पदशामें स्वयंके आत्माका आश्रय तथा अरिहंतादिकी उपासना होती है। .....

(४) योग और उपयोगका आत्मा कदाचित् कर्ता कहा जा सके किन्तु परद्रव्य स्वरूप कर्मका कर्ता निमित्तरूप भी नहीं है।.....

(५) एक पर्यायका व्यय, दूसरी पर्यायका उत्पाद और उन दोनोंमें द्रव्यका ध्रौव्यरूप रहना ऐसी वस्तु स्थिति है। .....

प्रश्न : ३ नीचे दिये गये प्रश्नोंके उत्तर शोर्टमें दिजीये। १०

(१) जब तक स्व-परका भेदज्ञान नहीं होता तब तक जीवकी प्रवृत्ति किस प्रकारकी है ?

(२) ज्ञानीको भी विषयोंकी प्रवृत्ति होती है लेकिन उसके प्रति राग कैसा लगता है ?

(३) किसकी उपासना करनेसे जीव स्वयं परमात्मा बन जाता है ?

(४) स्वप्नदशामें देखे गये शरीरादिका नाश होने पर भी आत्माका नाश होता नहीं है वैसे जागृत अवस्थामें भी देखनेमें आनेवाला शरीर आदिका नाश होने पर भी किसका नाश होता नहीं है वह बतलाओ ।

(५) संसारके दुःखोंसे मुक्त होनेका और परमपदकी प्राप्तिका उपाय क्या है ?

प्रश्न–४ : नीचे दिये गये प्रश्नोंके उत्तर एक ही शब्दमें दिजीये । **१०**

(१) मुनिको स्वयंकी शक्ति अनुसार कायक्लेशादिरूप दुःखोंसे शरीरादिसे भिन्न किसकी भावना करना ? .....

(२) कौनसा एकांत मत आत्माको सर्व अवस्थामें शुद्ध स्वरूप ही मानता है ? .....

(३) अर्हंतादिसे भिन्न साध्यकी उपासना वह निश्चय उपासना है या व्यवहार उपासना ? .....

(४) ज्ञानीको भेदविज्ञानके बलसे जैसे जैसे वीतरागताकी वृद्धि होती जाती है, वैसे उसके शेष कर्म उदयमें आने पर क्या होता है ? .....

(५) वीतरागरूप निर्विकल्प दशा प्रकट होने पर जीवको वचनातीत किसका अनुभव होता है ? .....

प्रश्न : ५ नीचे दिये गये कोई भी एक विषय पर १०-१२ लाईनमें निबंध लिखें । **१०**

(१) साधक जीवको आत्म आराधनाके समय अनेक कष्ट सहन करनेकी आदत डालनेको क्यों कहा है संक्षिप्तमें दर्शाईये ।

(२) बांसके वृक्षके दृष्टांत द्वारा अभिन्न आत्माकी उपासनाका फल क्या बतलाया है ? उसे बतलाईये ।

(३) चार्वाक मत और सांख्यमतकी विपरीत मान्यता सम्बन्धित चर्चा किजीये ।

नोंध : कृपया प्रश्नपत्र–९ के उत्तरपत्र ता. २८-२-२०२३ तक सोनगढ़ पहुँचे इस प्रकारसे भेजे ।